॥ श्री गोवर्द्धननाथो विजयते ॥

श्रीगोवर्द्धन ग्रन्थमाला का चवालीसवाँ—पुष्प

* श्रीमद्प्रभुचरण श्री गुसाँईजी कृत *

मङ्गल चतुष्पदी-श्रीयमुनाष्टपदी सौंदर्य पद्य

श्री हरिरायजी कृत भाव प्रकाश टीका सहित एवं

(अष्टसखा तथा अष्ट समय के दर्शन-भाव सहित)

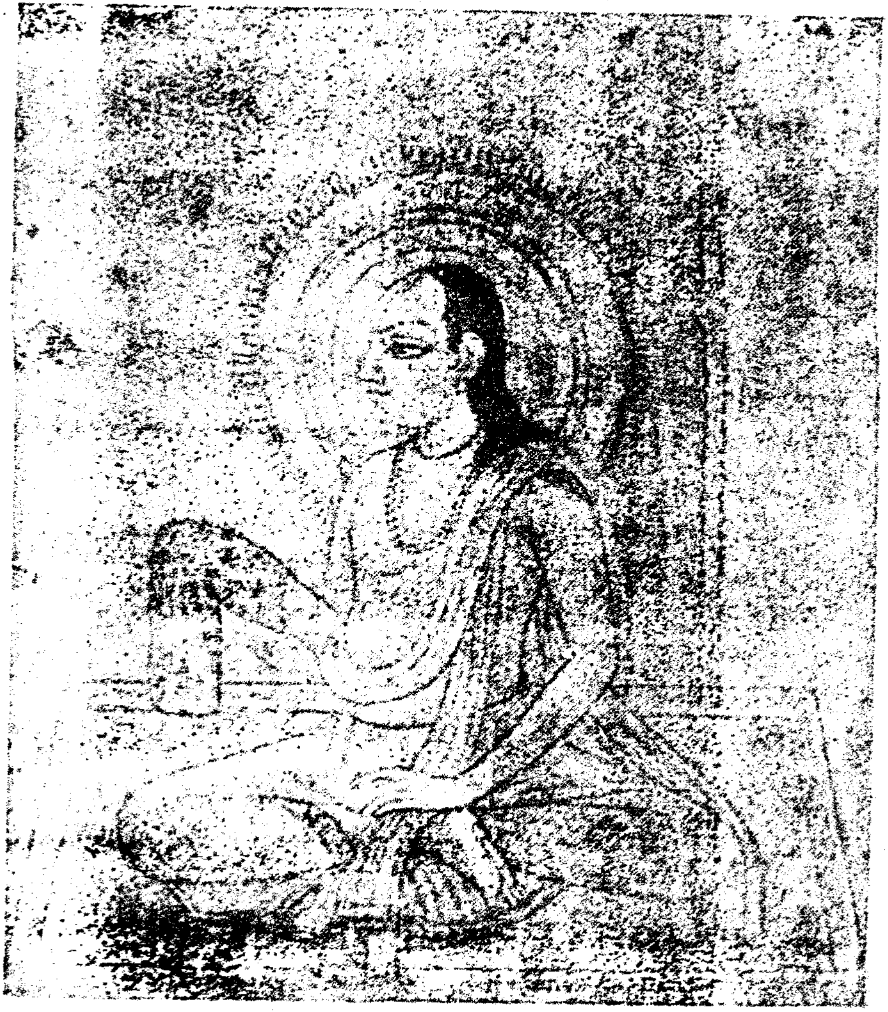

सम्पादक—निरंजनदेव शर्मा

प्रकाशक:—श्री गोवर्द्धन ग्रन्थमाला कार्यालय
दाऊजी घाट, मथुरा

॥ श्रीहरि ॥

卐 श्री गोवर्द्धननाथो विजयते 卐

अथ अष्टसखा तथा अष्ट समय के दर्शन कौ भाव लिख्यते

प्रथम दर्शन मंगला कौ तामें श्री नवनीतप्रियाजी को भाव। परमानन्ददास कीर्तन गामें। सारस्वत कल्प में दिन में तो तोष सखा रात्रि के बिहार में चन्द्र सहचरी, तिनकी श्री नवनीतप्रियाजी के दर्शन में आसक्ति। ग्वाल पगा कौ सिंगार तिनकी ओरको। तिनकों बाललीला को अनुभव श्रवण स्थान में ते प्रगट मंगला के दर्शन में मुख्य-भाव सुरभीकुंड के ऊपर स्याम तमाल के नीचें श्री गिरिराज में निवास।

❀ अथ सिंगार के दर्शन को भाव ❀

सो सिंगार के दर्शन में श्री गोकुलचन्द्रमाजी के दर्शन कौ भाव नन्ददासजी कीर्तन करैं सारस्वतकल्प में दिवस में तौ भोज सखा और रात्रि के बिहार में नई इन्द्र सहचरी श्री गोकुलाचन्द्रमाजी के दर्शन में आसक्ति तिनकी ओर को सिंगार फेंटा कौ, तिनको श्री रासपंचाध्यायी की लीला में अनुभव उदर स्थान मेंते प्रागट्य सिंगार के दर्शन में मुख्य भाव मानसी-गंगा के ऊपर पीपर के पेड़ के नीचे श्री गिरिराज में निवास।

॥ अथ श्री ग्वाल के दर्शन को भाव ॥

ग्वाल के दर्शन में श्री द्वारिकानाथजी के दर्शन कौ भाव गोविंद्स्वामी कीर्तन करें, सारस्वत कल्प में दिवस में तौ श्री दामा सखा और रात्रि के बिहार में भामा सहचरी, तिनको श्री द्वारिकानाथजी के स्वरूप में आसक्ति तिनकी और कौ सिंगार टिपारा कौ, तिनको हिंडोरा की लीला कौ अनुभव नेत्रन में ते प्रगट ग्वाल के दर्शन में मुख्य भाव तिनकौ निवास गोविन्दस्वामी की कदमखंडी में ऐरापत कुंड के ऊपर श्री गिरिराज में निवास ॥ ३ ॥

॥ अथ राजभोग के दर्शन कौ भाव ॥

सो श्रीनाथजी के दर्शन कौ भाव श्री कुंभनदासजी कीर्तन करें, सारस्वत कल्प में दिवस में तौ अर्जुन सखा और रात्रि के बिहार में विसाखा सहचरी तिनकी श्री गोवर्द्धननाथजी के दर्शन में आसक्ति तिनकी आड़ी कौ सिंगार कुल्है कौ निकुंज लीला कौ अनुभव हृदय स्थान में ते प्रागट्य राजभोग के दर्शन में मुख्य भाव और आन्यौर में सद्दू पांडे के नीम के वृक्ष नीचें श्री गिरिराज में निवास ॥४॥

अथ पाँचमों दर्शन उत्थापन कौ भाव

सो उत्थापन में श्री मथुरेशजी दर्शन देंय और सूरदासजी कीर्तन करें। सारस्वत कल्प में दिवस में तौ कृष्णसखा और

रात्रि के विहार में चंपकलता सहचरी तिनकी श्री मथुरानाथजी के स्वरूप में आसक्ति तिनकी और कौ सिंगार पाग कौ तिनकौ मानलीला कौ अनुभव, मुखारविंद में सूं प्रागट्य तिनकौ उत्थापन दर्शन में मुख्य भाव सघन कंदरा परासौली में चन्द्र रोवर के ऊपर श्रीगिरिराज में निवास ॥५॥

अथ भोग समय के दर्शन कौ भाव

सो भोग समय के दर्शन में श्री गोकुलनाथ जी दर्शन देंइ, चतुर्भुजदास कीर्तन करें, सारस्वत कल्प में दिवस में तौ सुबाहु सखा और रात्रि' के विहार में सुशीला सहचरी, तिनकी श्री गोकुलनाथजी के स्वरूप में आसक्ति तिनकी और कौ सिंगार सेहरा कौ तिनकों अन्नकूट की लीला कौ अनुभव हृदय स्थान में ते प्रागट्य भोग के दर्शन में मुख्यभाव रूद्रकुंड ऊपर इमली के नीचे नये कुंड के पास श्री गिरिराज में निवास ॥६॥

अथ संझा आरती के दर्शन कौ भाव

सो संझा आरती के समय श्री विट्ठलनाथजी दर्शन देंय हैं, और छीतरस्वामी कीर्तन करें, सारस्वत कल्प में दिवस में तौ सुबल सखा और रात्रि के विहार में पद्मा सहचरी तिनकी श्री विट्ठलनाथजी के दर्शन में आसक्ति तिनकी और कौ सिंगार दुमालौ श्रीगुसाँईजी की जन्मलीला कौ अनुभव कटिस्थान में

ते प्रागट्य संझा आरती के दर्शन में मुख्य भाव अपछराकुंड के ऊपर स्यामतमाल के नीचें श्री गिरिराज में निवास ॥७॥

अथ सेंन के दर्शन कौ भाव

आठमों दर्शन सेंन कौ तामें श्री मदनमोहनजी के स्वरूप कौ भाव कृष्णदास अधिकारी कीर्तन करें, सारस्वत कल्प में दिवस में तौ ऋषभ सखा और रात्रि के विहार में ललिता सहचरी तिनकी श्री मदनमोहनजी के स्वरूप में आसक्ति तिनकी और कौ सिंगार, मुकुट कौ तिनकों रासलीला कौ अनुभव चरण स्थान में सों प्रागट्य सेंन के दर्शन में मुख्य भाव बिलछूकुंड के ऊपर स्याम तमाल तथा कदंब के वृक्ष के नीचे श्री गिरिराज में निवास ॥८॥

॥ इति श्री अष्टसखा तथा अष्ट समय के दर्शन कौ भाव ॥

श्री मंगलं मंगलं की टीका हरिरायजी कृत लिख्यते

अब श्री गुसाँईजी मंगलं मंगलं कीये सो तामें जन्म प्रकरन की लीला ते फल प्रकरन की रासपचाध्यायी ताँई सर्व लीलान कौ भाव कहें हैं। सो मंगलं मगलं में ब्रजलीला कौ बरनन है, सो ताकी टीका श्री हरिरायजा कहत हैं। जो मैं श्री गुसाँईजी की कृपा तें मंगलं मंगलं की टीका करत हों। सो ताकौ अभिप्राय यह है' जो ब्रजलीला सम्बन्धी महामंगल रूप सो मेरे हृदय में नित्य अहरनिस विहार करैं सो ता अर्थ। यह टीका करत हों। अब प्रथम श्लोक कहत हैं:—

राग रामकली : मंगलं मंगलं ब्रजभुवि मंगलं मंगलमिह श्रीनन्दयशोदा नामसुकीर्तन मेतद्रुचिरोत्संगसुलालित पालितरूपम् ॥१॥

याकौ अर्थः—मङ्गल मङ्गल दोय बार कहे सो यामें यह भाव हे जो मङ्गल रूप भगवान सो मंगल रूप ब्रज भूमि विषें, प्रगट भये सो तासों सगरी ब्रज सम्बन्धी वस्तु सर्व विषे मंगल रूप भई, सो तामें तौ जन्मप्रकरण के चार अध्याय की लीला जाननी, सो ऐसी भूमि विषें पूर्ण पुरुषोत्तम कौ प्रागट्य भयौ, तासों ब्रजभूमि महामंगल रूप है और सात अध्याय में प्रमाणप्रकरण की लीला है, सो श्री यशोदाजी के भाव की लीला है सो कहत हैं जो ब्रज सम्बन्धी पदारथ हैं सोउ महामंगल रूप हैं, और श्री नंद यशोदाजी मंगल मंगल रूप काहे ते हैं ? जो श्री नंद यशोदाजी के उत्संग में परम सुन्दर बालक विराजमान हैं, सो तिनकौ लालन पालन श्री नंद यशोदा जी करें हैं, सो तासों नंद यशोदाजी कौ नाम मंगलरूप है, जैसे श्री ठाकुरजी को नाम लीये तें महामंगल कल्यान की प्राप्ति होय है तैसें ही ब्रजभूमि श्री यमुनाजी श्री गिरिराजजी इनके नाम लीये तें कल्यान होय है, सो ताही प्रकार श्री नंद

यशोदाजी के नाम लेत ही मंगल कल्यान होत हैं, सो ताही सों श्लोक में मंगलमय श्री नंद यशोदाजी कहे हैं सो यहाँ श्री में नंदयशोदाजी की सोभा में नंदरायजी कौ सगरो परिकर नवनंद आदि नंदरायजी के सम्बन्ध वृद्ध गोप सब आये और यशोदाजी के सम्बन्ध में वृद्ध गोपी जिनकौ यशोदाजी सों सम्बन्ध है, तिनकौ नाम हू कल्यान करत हैं, और लालित पालित रूप यामें कहे, सो जितने नंद यशोदाजी के घर में पदारथ हैं, दही दूध माखन छाछ और सामिग्री तथा सामिग्री के पात्र तासों श्री ठाकुरजी की सेवा सिद्धि होत है सो श्री यशोदाजी के घर विना श्री ठाकुरजी की सेवा योग्य कछू भी वस्तु सिद्धि नांही है, तासूं सगरी घर सगरी वस्तु श्री यशोदाजी के देह सम्बन्धी पदारथ सगरे श्री ठाकुरजी के सेवा सम्बन्धी हैं सो तासों महामंगल रूप हैं, सो काहे तें जो सगरी वस्तु स्वरूपात्मक हैं, तासों श्री ठाकुरजी अंगीकार करत हैं, ब्रजभूमि मंगल काहे सों तामें तौ ब्रजभूमि के सम्बन्धी पदारथ स्वरूपात्मक हैं, जो जहाँ श्री ठाकुरजी पधारिकें लीला कीये सो ब्रजभूमि कैसी है, भगवत् रूप सी है, और श्री यमुनाजी श्रीकृष्ण के समान हैं और श्री गिरिराजजी भगवान समान हैं, तथा ब्रज के वृक्षादिक सगरे भगवद्रूप हैं। और सगरे ब्रज में लक्ष्मी आयके निवास करत हैं सो ऐसी ब्रजभूमि है, जो ताकौ आश्रय लक्ष्मीजी कीयौ सो तैसो आनन्द मंगल श्रीकृष्ण नाम सों होत है, तैसो-

ही आनन्द मंगल ब्रजभूमि के स्मरण ते होत है सो काहे तें ? जो सगरों ब्रजलीला सम्बन्धी है तासों लीला सम्बंधी नाम श्री ठाकुरजी को बोहत प्यारो है सो लीला सम्बन्धी श्री ठाकुरजी को नाम लीये तें भगबान की लीला को स्मरण होत हैं, तासो ब्रजभूमि तथा ब्रज सम्बन्धी वस्तु मंगलकारी हैं सो तैसे ही नन्द यशोदाजी को नाम भगवान के लीला सम्बंधी है, तासों कल्याण को कर्त्ता है और श्री यशोदोत्संग लालित सो ऐसे भगबान तिनको स्वरूप कल्याण कर्त्ता है । सो नित्य प्रति क्षण क्षण में स्मरण करिवे योग्य है सो या प्रकार प्रथम श्लोक में जन्मप्रकरण ते लेके प्रमाणप्रकरण की लीला सगरी बर्णन है सो तासों इतनों गान करत ग्यारह अध्याय की लीला को स्मरण करनों । अब प्रमेयप्रकरण की लीला दूसरे श्लोक में कहत है ॥ १ ॥

श्री श्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम
स्वार्तजनाशयतापापहामीति मंगल-
रावम् । ब्रजसुन्दरीवयस्यसुरभीवृंदमृगी
गणनिरुपमभावा(वं) मंगल सिंधुचया
(यम्) ॥ २ ॥

अब कहत हैं जो श्री कृष्ण नाम कैसो है महा मंगलकारी है, और वेद शास्त्र पुरान सर्व कौ सारभूत है, सो काहे तें ? जो बेद में जितने लौकिक वैदिक धर्म कहे हैं, सो करै तौहू श्री कृष्ण नाम के समान नाही हैं। सो कहत हैं, जो वेदव्यासजी नें सत्रह पुरान प्रगट किये, तामें नाना प्रकार के कर्म धर्म कौ निरूपण कीयो सो ता करिकें व्यासजी कौ हृदय शीतल न भयौ। पाछें जब श्री भागवत न्यारो करिकें भगवद् स्वरूप नामात्मक ताकौ वर्णन कीये, तब हृदय शीतल भयौ, तासों श्रीकृष्ण नाम समान कछू पदारथ नाँहीं हैं, श्री बिना केवल कृष्ण हैं तामें दोय प्रकार के भाव हैं जा जीव कौ पुष्टिमार्ग में समर्पण अंगीकार नही भयौ है, सो बिना श्री कृष्ण नाम लेत हैं। कल्पान्तर में जो द्वापर में कृष्ण प्रकट भये हैं। सो पूर्ण अवतार नांहीं हैं, तिनको स्मरण प्रवाही मर्यादा मार्ग में है। और पुष्टिमार्ग में सारस्वत कल्प के श्रीकृष्ण जी रसात्मक सेव्य हैं ताही सूँ अस्टाक्षर में श्री कृष्ण : समस्त भक्तन सहित श्रीकृष्ण कौ नाम है, और पंचाक्षर में मुख्य श्री स्वामिनी जी के भाव सों विप्रयोगात्मक नाम हैं तासों पंचाक्षर में श्री नांही है। तासों अष्टाक्षर संयोगात्मक स्वरूप है और पंचाक्षर विप्रयोगात्मक स्वरूप है। सो दोऊ पुष्टिमार्ग में पूर्ण अवतार श्रीकृष्ण तिनको नाम रसात्मक सेव्य है, सो सर्ववेद शास्त्रन कौ सार है, ऐसौ श्रीकृष्ण नाम महा मंगल कल्यान कर्त्ता है।

यहाँ श्री कृष्ण दोयबेर कहें ताको अभिप्राय यह है, जो कृष्ण में तौ एक श्री ठाकुरजी भये और श्री कृष्ण कहे तामें श्री स्वामिनीजी और श्री ठाकुरजी भये, श्री श्रीकृष्ण में एक मुख्य श्री स्वामिनीजी और दूसरे श्री में दक्षिण भाग जो स्वामिनीजी श्री चन्द्रावलीजी आदि सगरे ब्रजभक्त संबंधी पदारथ लीलास्थल श्री यमुनाजी श्री गिरिराजजी गाय लीला सामिग्री सर्व कौ नाम है, सो काहे तें? जो श्री कृष्ण की शोभा रूप श्री स्वामिनीजी हू हैं और लीला सामिग्री सगरे ब्रजभक्त सोउ श्री ठाकुरजी की शोभा हैं। तासों दोय बार श्री कृष्ण कहिकें सगरी लीला सामिग्री सहित श्री स्वामिनीजी श्री कृष्ण महामंगल रूप हैं। तासों श्री कृष्ण कौ नाम लीये ते सगरे भक्तन को आनन्द होत है, ताही तें पुष्टिमार्ग में जय श्री कृष्ण वैष्णव प्रति कहनों आवश्यक है, काहें तें? जो श्री कृष्ण की जै कहे तें श्री यशोदाजी कौ परम आनन्द होत है। जो मेरे पुत्र की जै कहत हैं, या प्रकार पुत्र के स्नेह तें श्री नन्दरायजी यशोदाजी प्रसन्न होत हैं। जो मेरे पुत्र कौ कल्यान वांछित हैं तासूँ तिनहू कौ कल्यान होउ और श्री कृष्ण की जै कहे तें सखा जो श्री कृष्ण के हैं, सो परम प्रसन्न होत हैं जो हमारे प्राणप्रिय जो मित्र कृष्ण हैं तिनकी जै कहत हैं और ब्रजभक्त श्री स्वामिनी जी आदि तौ परम प्रसन्न होत हैं जो हमारे सर्वस्व प्राणप्रिय तिनकी जय कहत हैं। तासूं या प्रकार श्री कृष्ण की जय कहें ते समस्त पुष्टिमार्गीय भक्त प्रसन्न होत हैं,

तासों पुष्टिमार्गीय वैष्णव सों जय श्रीकृष्ण कहिये और भगवद् नाम अनेक हैं तिनकौ उच्चारण करिये तहाँ यह द्विदलात्मक संयोग विप्रयोग रस की मोक्तता नांहीं हैं। यह दान तौ श्री आचार्यजी महाप्रभूजी द्वारा सिद्धि होत है, और जय श्री कृष्ण कौ यह कारण है जो पुष्टिमार्गीय कौ एक क्षण भगवद् नाम भूलनों नांहीं चाहिये, और जीव भाव ते भूल जात है, सो वैष्णव संग भये ते श्री कृष्ण कौ स्मरण होत है ताही तें वैष्णव कौ संग मुख्य है, और नाम की प्राप्ति तौ श्री आचार्यजी द्वारा हू भई और वैष्णव संग भये तें श्रीकृष्ण नाम कौ स्मरण होयतो वृक्ष में फल फूल होय तासों वैष्णवकौ संग जब जानिये भयौ तब श्री कृष्ण स्मरण भक्ति सिद्धि होय या प्रकार श्रीकृष्ण नाम सर्वोपरि महामंगल रूप है। सो वर्णन करिवे की काहू की सामर्थ नांहीं है। और श्री कृष्णनाम कैसौ है, स्वकीय जन जो ब्रजभक्त हैं, सो विप्रयोग दशा में नाम के आधार जीवत हैं, और सर्व अनुभव होत हैं विरह ताप हृदय को दूर होत है। तासों श्री कृष्ण नाम कौ कीर्तन महामंगल कल्याण कौ कर्त्ता है, सो या श्लोक में प्रमेय प्रकरण की लीला वेणुगीत ताँई सब विवरण है, सो कहत हैं जो श्रीठाकुरजी आप गोचारण कौ पधारत हैं, तब ब्रजभक्त श्रीकृष्ण की लीला कौ वरणन करि गांन करत हैं। सो गांन कैसौ है महामंगल रूप है और ब्रजभक्त मंगल रूप है सो नाम कौ कौर्तन करत हैं।

कीर्तन कै सौ करत है, जैसे श्री भगवान षटगुणपूरणं धर्मी स्वरूप हैं। तैसे ही श्री भगवान कौ कीर्तन शब्द गुण पूरण है सो कहत हैं, बन की लीलान कौ ब्रजभक्त गान करत है, तहाँ सखा गाय हिरनी इत्यादिक श्री वृन्दावन के पशु पक्षी सर्व महामंगल रूप हैं। काहे तें ? जो श्री ठाकुरजी गाय बछरा लैके सखान सहित श्री वृन्दाबन में पधारत हैं सो तहाँ श्री ठाकुरजी वेणु कौ श्रृंगार धरत हैं और वेणुनाद करत हैं। सो ता करिके पूरण रस अभोगित ब्रजभक्तन कौं सुधा प्राप्ति भई, और श्री वृन्दावन में वेणु कौ भोगित श्रृष्टि हिरनी गायन कौं अमी हू प्राप्ति भई, सो षटगुण सहित लीला वरणन ब्रजभक्त करत हैं सो तहाँ भगवान कौ प्रथम ऐश्वर्य कहत हैं। जो अत्यन्त चंचल मृगी सो सर्व मोहित भई, पीछे वीर्य कौ वर्णन जो देवांगना वेणुनाद सुनिके थकित होय रही, सो अपने पति के आगे विहवल भईं केस और नीवी की ग्रंथि छूट गई, सो ऐसी उत्तम देवांगना की ऐसी दिशा भई सो ऐसौ भगवान कौ वीर्य है। और भगबान कौ यस यह है, जो गाय चरती हती सो पसून की आसक्ति जिन विषे अत्यन्त हैं, वेणूनाद सुनिकें भूलि गईं, बछरा छीर पीवत तें रहि गये जितने पशु हैं सो वेणूनाद रस में मग्न भये यह श्री भगवान के यश कौ वर्णन है, अब श्री (शोभा) कौ वर्णन करत हैं जो बृन्दाबन के शुकादिक पक्षी हैं सो वेणुनाद सुनिकें द्रुम पर पंक्ति की पंक्ति

परम शोभा देत हैं सो यह श्री अब ज्ञान में श्री यमुनाजी वेणुनाद सुनिकें श्री वृन्दाबन तथा ब्रज सम्बन्धी नदीनकी प्रभाव नहीं बहत हैं। जैसे ज्ञान होय तौ श्री ठाकुरजी के चरण कमल में मन रंचक हू न चलै, सो या प्रकार नदीन को ज्ञान भयौ जो प्रवाह स्थिर होयकें श्रीठाकुरजी के चरण कमल को तरंग रूप भुजा सों वेणुनाद करत हैं, यह ज्ञान है। और वैराग्य मेघ भगवान के ऊपर छाया करत हैं सो बादर आय धूप सहत हैं, और अपनों सर्वस्व जो जल ताकी फुही फुही बरषावत हैं,यह वैराग्य हैं। और गिरिराजजी पुलिंदनीजी इनके चरणारविंद के सम्बन्ध में भक्ति है, सो प्रकार सगरे वृन्दावन सम्बन्धी की भाव मंगल रूप है, यामें प्रमेय की प्रकार है और अव तीसरे प्रकरण में फल प्रकरण की लीला है सो बरनन करत हैं ॥२॥

मंगल मीषात्स्मितयुत वीक्षणभाषण-
मुन्नतनासापुटगतमुक्ताफल चल-
नम् । कोमलचलदंगुलिदलसंगत
वेणुनिनादविमोहित वृन्दावनभुवि-
जाता (तम्) ॥ ३ ॥

अब कहत हैं, जो मंगल रूप भगवान का थाड़ौ सौ मन्दहास्य तथा अवलोकन तथा बोलिवो बचनामृत सो मंगल रूप है, सो व्रतचर्या के प्रागट्य में यह बर्णन है अब ऋृषीरुपा व्रत कीये, तब श्री ठाकुरजी आप चीर लैके कदम्ब पर विराजे, पाछें मन्दहास्य बंक अवलोकन की सींचन सों सर्व रस कौ अनुभव कुमारिकान कों सिद्धि भयौ, तथा श्री ठाकुरजी के नाशिका कौ मोती हलिबो महामंगल रूप है, तथा कोमल चंचल अंगुली दल तिनसों मिल्यौ वेणूनाद तासों मोहित भये हैं। ऐसे जो बृन्दाबन के पशू पच्ची वृक्षादिक सो मंगल रूप है, तथा गोवरधन पूजा की शिक्षा श्री ठाकुरजी श्री नन्दराय जी कों कीये तन सगरे ब्रजवासी सहित श्री नन्दरायजी श्री गोवरधन पूजन कीये, सो सुनिके इन्द्र कोप भयौ तब प्रलय काल के से मेघ की वृष्टि (बरषा) ब्रज पर होन लगी, तब श्री ठाकुरजी ने गोवर्धन को वाम भुजा के ऊपर धरिके सगरे ब्रजवासी व्रजभक्तन को अपने निकट राखे, वेणुनाद करत जात हैं ता करिके सर्व ब्रजभक्तन को गाय पशू पक्षी वृक्ष सबन को सुधा (अमृत) पान होत है सो सात दिन रात जात काहू ने न जान्यो या प्रकार जब सर्वत्र भक्त इन्द्र के भय ते श्री ठाकुरजी की शरण में आए सो स्वरुपानन्द कौ अनुभव हू भयौ फेरि इन्द्र के जल ते रक्षा हू भई सो इत्यादिक लीला या श्लोक में फल प्रकरण की हैं ॥३॥

मंगलमखिलं गोपीशितुरतिमं-
थरगति विभ्रममोहितरासस्थितगानम्
त्वं जय सततं गोवर्धनधर पालय
निजदासान् ॥४॥

श्रीठाकुरजी के सम्बन्धी जो पदारथ हैं, सो मखिलं नाम अखिल सर्व मधुर ही हैं तथा मंगल रूप हैं, यामें यह जताये जो फल प्रकरण की प्रथम अध्याय में श्री ठाकुरजी बनमें पधारि शरद ऋतु के अर्ध रात्रि समय वेणुनाद कीये, सो ता समय लीला सामिग्री सर्व प्रफुल्लित पुष्पित भई, और चन्द्रमा अलौकिक भयौ श्री शुकदेव जी वर्णन कीये हैं। तासू लीला सामिग्री सर्व मंगलरूप हैं, ऐसी अलौकिक रात्रि में ब्रज भक्तन सहित श्री ठाकुरजी रासलीला कीये, तहाँ मत्त गज चाल सों हस्ती कौ दृष्टाँत श्री शुकदेवजी रासपंचाध्यायी में दीये ताते ये उनमत्तता और में नांही है, और स्पर्श कौ सुख हस्ती ही जानत है, ताते ब्रजभक्तन के संग श्री ठाकुरजी हू उनमत्त रस होय भक्तन को स्वरूपानन्द कौ अनुभव करावत हैं, सो गजगति चाल महामंगल रूप है, और रास लीलास्थ मुख्य श्री स्वामिनीजी कौ गान तथा तिनसों मिल्यौ समस्त ब्रजभक्तन कौ गान महामंगल रूप है। और श्री ठाकुरजी श्री

स्वामिनीजी हू परस्पर गांन मिलिके करत हैं, कबहू न्यारे फरकत हैं, सो यह नित्य लीला कौ रास है। सोऊ गानादिक सर्व लीला मंगल रूप हैं, यह कहिके यामें सगरी रास पंचाध्यायी की जल स्थल लीला कौ भाव है। सो सर्व मंगल रूप है, तासों इन मंगल पदार्थन की जन्म-लीला ते युगलगीत ताँई स्मरण करत हैं, सो महा मंगल की प्राप्त होत हैं। सो ज्ञानादिक में युगलगीत कौ भाव जाननों काहे ते? जो रास पंचाध्यायी पीछे जब बनमें श्री ठाकुरजी वेणुनाद करत हैं, तब ब्रजस्थ भक्त अपने घरमें गांन करिके आगे जो स्वरूपात्मक कौ अनुभव भयौ है, ताही भावमें मग्न होय श्री ठाकुरजी के संग गान करत हैं, सो या प्रकार वेणुगीतमें नांहीं, वेणुगीत मेंतौ अपने घरही के भाव में होइ गान करत हैं सो साक्षात् सर्वेन्द्रिय कौ साक्षात् हृदय कौ अनुभव है। ताही तें या अध्याय कौ नाम युगलगीत श्री ठाकुरजी सहित ब्रजभक्तन कौ ज्ञान है, जैसे पंचाध्यायी में भयौ सो पंचाध्यायी में संयोग करिके है, और युगलगीत में विप्रयोग प्रकार सों है या प्रकार जन्म प्रकरण की लीला ते फल प्रकरण ताँई जो नित्य स्मरण करत हैं, तिनकौ पालन नाम रक्षा करौ, तथा श्री गोवर्धनधर आप सदाँ विराजौ, तहाँ श्री गुसाँईजी कहत हैं, जो ऐसे महामंगल रूप श्री गोवर्धनधर तिनकी जै होय, या भाँति सो हम निरंतर कहत हैं काहे ते? जो तिहारे निज दास अन्तरंग लीला संबंधी

हम हैं सों तिनकी रक्षा करौ, अधरामृत सों सींचन करि बिरह दूरि करौ, या प्रकार श्री गुसाँईजी आप विज्ञप्ति करत हैं, सो यह मंगलं मंगलं गीत याके लिये प्रगट कीये जो एतन्मार्गीय वैष्णव कूं सेवा आवश्यक है और जन्मप्रकरण ते फल प्रकरण कौ पाठ आवश्यक है, सेवा में सो कैसे करें, तथा सेवा सम्बन्धी ग्रंथ तथा सेवा रहि जाय, ताके लिये मंगला आरती समय यह मंगलं मंगलं गान करै, तामें फल प्रकरण तांई श्री भागवत कौ पाठ सगरौ भयौ, याके लिये श्री गुसाँईजी आप मंगल गीत प्रकट कीये हैं सो यह गीत नित्य गान करें, तो महामंगल रूप भगवान लीला सहित वाके हृदय में आइके महामंगल करैं, सो मंगलं गीत के गान तें पुष्टि मार्गीय वैष्णवन कों मंगलं रूप होइ, और अहर्निस आनन्द कौ अनुभव होई।

॥ इति श्री हरिरायजी कृत मंगल चतुष्पदी की टीका सम्पूर्णम् ॥

श्री गुसाँईजी कृत 'मंगल' चतुष्पदी को द्वितीय भाव

श्री गुसांईजी मंगल चतुष्पदी करिकै स्वकीय पुष्टिमार्गीय जीवन को शिक्षा करे हैं। यह चतुष्पदी दिन भरिके सेवा कौ मंगलाचरन है। जैसे ग्रंथ के आदि में निर्विघ्न समाप्ति के अर्थ सब मंगलाचरन करें हैं, तेसे या चतुष्पदी कों जो प्रातः

गावे हैं अर्थ विचारे हैं, अथबा मंगला आरति के समय प्रभुन सान्तिधान गावे हैं, उनको सगरो दिन सेवा में मंगला तें सयंन पर्यंत निर्विघ्न व्यतीत होय हे। सो चतुष्पदी को भाव :—

चतुष्पदी में प्रथम चारि मङ्गल शब्द के बीच में ब्रजभूमि शब्द है। ताको आसय जो चारस्थल में मंगल शब्द कौ व्यवहार होय है। सुभ को और प्रातःकाल कों। और सुन्दर सकुन कों और उत्सव कों मंगल कहे हैं। तामें प्रमाण 'विश्व कोष'...

मङ्गलं च शुभे कल्पे शोभने शकुने महे ॥इति॥

सो ए चारों मङ्गल एक ब्रजभूमि में सदा रहे हैं। काहे तें? जो ब्रज में श्रीकृष्ण सदां बिराजें हैं। फेरि श्री नन्दराय जी यशोदाजी के नाम के कीर्तन मंगल रूप हैं।

ताकौ भाव :— जो श्रीनन्दरायजी यशोदाजी के अनिर्वचनीय बडे भाग्य हैं। साक्षात् परब्रह्म श्रीकृष्ण कों गोदि में खिलावें हैं। तातें प्रातःकाल बडे भाग्यवान के नाम के कीर्तन तें अपने हु यथाधिकार बडे भाग्य होंइगे। फेरि श्री नन्दरायजी यशोदाजी की गोद विषे लालित पालित रूप जो श्री बालकृष्ण सो मंगल रूप हैं। यामें भाव—जो प्रातःकाल प्रतापी विजयसील के नाम के कीर्तन ते अनिष्ट निवृत्त होय

है। सो श्री बालकृष्ण प्रतिदिन रात्री को रति संग्राम जीति के प्रातःकाल श्री मातृचरण की गोदि रूप विजय सिंहासन पर विराजे हैं। एतादृश प्रतापी विजयशाली श्री बालकृष्ण के स्मरन कीर्तन ते सब अनिष्ट की सेना भाजि जाय है ॥१॥

फेरि श्री स्वामिनी सहित श्री कृष्ण नाम सब वेद की श्रुतिन को सार है। और आर्त वियोगी भक्तजनन के ताप नास कर्ता मंगल शब्द येहि है। फेरि ब्रजभूमि वृन्दाबन विषे ब्रज सुन्दरी गोपी जनन के भाव और वयस्य जो गोप सखा मंडल तिनके भाव और हरणोन के भाव जो श्री कृष्ण विषे हैं, सो भाव उपमा सहित अनेक मंगल समुद्र हैं ॥२॥

तातें श्रीकृष्ण को मन्दहास्य संयुक्त देखनो और भाषण करनो। तातें नक बेसर मोती को हिलनो और कोमल अंगुरिन करिकै सुन्दर वेणुनाद करिकै विमोहित जो वृन्दावन विषे पशु पक्षी आदि सब मंगल रूप हैं ॥३॥

फेरि रास के विषे गोपीपति जो श्रीकृष्ण की मन्द स्वच्छन्द गति युक्त विलास नृत्यादिक तातें गोपांगना विमोहित करिकै जो गान इत्यादिक अखिल लीला सब मंगल हैं। या प्रकार मंगल निरूपण करिकैं श्री गुसाँईजी अपने निजजन के अर्थ प्रार्थना करे हैं, जो हे गोवर्द्धनधर ! तुम निज दासन को पालन करो ॥४॥

या चतुष्पदी के चार पद करिकै श्री गुसाँईजी स्वकीय जनन को जतावें हैं, जो चारि मंगल जो हैं, सो एक श्री यशोदोत्संग लालित श्री कृष्ण की सेवा विषें सदा विराजे हैं ।

॥ इति श्री मंगल चातुष्पदी को द्वितीय भाव ॥

अथ श्रीगुसाँईजी कृत 'यमुनाष्टपदी' को टीका

श्री गुसाँईजी यमुनाष्टपदी में श्री यमुनाजी की स्तुति के मिष प्रभुन में श्री यमुनाजी के भाव को प्रकास करे हैं सो अष्टपदी को प्रथम पद —

नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने-
हर कृष्ण मिलनान्तरायम् ।
निज नाथ मार्गं दायिनी कुमारी-
काम पूरके कुरू भक्तिरायम् ॥१॥ ध्रुवपदम्

श्री गुसाँईजी कहे हैं हे यमुना ! हम तुमको प्रणाम करे हैं फेरि हे यमुना ! हम तुमको प्रणाम करे हैं । श्री कृष्ण के मिलवे में अन्तराय जो प्रतिवन्ध हैं ताकों तुम हरन करो । और भक्ति रूप धन के धनी हमको करो । यहाँ श्री गुसाँईजी दोय प्रार्थना उत्कंठा तें करे हैं ताते दोय बार प्रणाम करे हैं । यामें श्री गुसांईजी जतावे हैं भगवद् प्राप्ति में प्रतिबन्ध दूरि

करिकै पुष्टि भक्ति देवे की सामर्थ्य एक श्री यमुनाजी में ही है। श्री यमुनाजी कैसी हैं निजनाथ जो श्री कृष्ण तिनके मार्ग को देवे वारी है। जौ - जब श्रीकृष्ण को श्री वसुदेव जी श्री गोकुल ले गए है तब मार्ग दियो है। अथवा श्री प्रभु निकुंजादिक में जहाँ बिराजि रहे हैं तहाँ को मार्ग भक्त-जनन कों श्री यमुनाजी बतावे हैं। फेरि कैसी है? जो अग्नि कुमारिका गोपी जनन की कामना पूर्ण किये हैं। श्री यमुना जी की कृपा तें कुमारिकान ने श्रीकृष्ण पति पाये हैं फेरि श्री यमुना जी कैसी हैं सो श्री गुसाँईजी आगे पद में वर्णन करे हैं :—

मधुप कुलकलित कमलावली व्यपदेश-
धारित श्रीकृष्ण निज भक्त हृदये।
सततमतिशयितहरिभावनाजात-
तत्सारूप्य गदित हृदये॥

भ्रमर के समूह करिकै व्याप्त जो कमलन की अवली नाम पाँती ताके मिस करिकै अपने में धरे हैं श्री कृष्ण सहित भक्तजन के हृदय जाने एतादृश है यमुना। अर्थात श्री यमुना जी में कमल जो फूले हैं सो तो गोपांगना के हृदय कमल हैं। ताके ऊपर चार्यों आडी भ्रमर गुन्जार करे है। सो भाव-रूप

श्री प्रभु है। यामें भाव जो भक्तन के हृदय के आसय और श्री प्रभुन के आसय श्री यमुनाजी जाने हैं। फेरि श्री यमुनाजी कैसी हैं? जो निरन्तर अतिसय श्रीकृष्ण की भावना करिकै आप स्याम रूप भई हैं। तातें अपने हृदय के आसय कौ प्रकास करे हैं। सो नन्ददास जो पंचाध्यायी में गाये हैं :—

'कृष्ण प्रेम ते कृष्ण होय यह नहिं अचरज वड'। इति

या पद में दोय पद संवोधन श्री यमुनाजी के विशेषण हैं। अब आगे पद में वर्णन—

'निजकुल भव विविध तरु कुसुम युत-
नीर सोभया विलसदलि बृन्दे।
स्मारयसि गोपीबृन्दपूजितः-
सरसमीशवपुरानन्दकन्दे ॥२॥'

निज अपने तट विषे विविध प्रकार के बृक्षन में ते नाना रंग के पुष्प जल में गिरे हैं। तहाँ भ्रमर विलास करे हैं। एतादृश शोभा करके हे आनन्द कन्द यमुना! तुम गोपी वृन्द करिकै पूजित सरस ईश वपुनाम श्री कृष्ण के श्री अंग को स्मरण कराओ हो। यामें भाव-जो भक्त जनन श्री प्रभु

को पुष्पन को शृंगार धरावे हैं तैसी शोभा स्याम जल विषें होय है। विप्रयोग काल में प्रभुन को स्मरण कराय कै विप्रयोग दुःख को वढ़ावे हैं। ताते प्रभु वेगि मिले। और आगे पद में वर्णन :--

उपरिचलदमल कमलारुणद्युति रेणु-
परिमिलित जल भरेणामुना।
ब्रज युवति कुच कुम्भ कुंकुमारूणमुर-
स्मारयसि मारपितुरधुना ॥३॥

स्याम जल के ऊपर चंचल निर्मम कमलन में ते अरुण रेणू भूर के छाय गए हैं एतादृश सोभा करिकै हे यमुना तुम मार जो कामदेव ताके पिता श्री कृष्ण के उरस्थल को स्मरण करो हो और उर स्थल कैसा है? जो ब्रज युवतिन के कुचको केशर आदि अंगराग करिकै अरुग है।

यामें भाव—जो विप्रयोग काल में भक्तजन अपने कुच को केसरि लग्यो प्रभुन के उरस्थल को स्मरण करिकै विचारे हैं जो हमको शकुन आछो भयो है, अब प्रभुन को श्री यमुनाजी वेगि मिलामेंगी। अब आगे पद में श्री यमुना जी के भाव वर्णन करे हैं :—

अधिरजनिहरिविंहृति मीक्षितु-
कुवलयमिधसुभगनयनान्युशति तनुषे ।
नयनयुगमल्पमिति बहुतराणि च
तानि रसिकता निधितया कुरुषे ॥४॥

हे यमुना ? तुमने रात्री में श्री कृष्ण कौ विहार देखिवे कों कमोदिनी रूप सुभग अपने सुन्दर नेत्र विस्तार किए है । काहेते ? जो तुम रसिकता की निधि हो । ताते दोय नेत्र को अल्प जानि कै बहुत नेत्र तुमने किये हैं । अर्थात् रात्रि में कमोदिनी सब प्रफुल्लित भई हैं । श्री प्रभून कौ विहार देखिवे में दोय नेत्र ते तृप्ति श्री यमुनाजी कों नहीं होय है । और आगे पद में वर्णन :—

रजनिजाग रजनितराग रंजित-
नयन पंकजैरहनिहरिमीक्षसे ।
मकरंद भर मिषेणानन्द पूरिता-
सततमिह हर्षाश्रु मुंचसे ॥५॥

हे श्री यमुना तुम्हारे रात्रि के जागरण ते आरक्त अनुराग भरे नेत्र सों सब दिन में कमल भये हैं । या करिकै तुम दिन में हरिजो सब भक्तन के दुःख हर्ता श्री कृष्ण कों निरखो

हो। अर्थात् दिन में लाल कमल सब प्रफुल्लित भए हैं। सो सब नेत्र हैं। और कमलन में ते मकरन्द रस टपके हैं। सो ताके मिस करिकै हे यमुना! तुम निरन्तर आनन्द पूर्व हो ताते हर्ष के अश्रुपात करो हो अब आगे पद :—

तटगतानेक शुकसारिका मुनिगण
स्तुत विविध गुण सीधु-सागरे।
संगता सततमिह भक्तजन
तापहतिराजसे रासरससागरे ॥६॥

तट विषें अनेक शुक सारिका पक्षीगण बोले हैं। सो सब मुनिगण त्रिविध प्रकार के गुणगान करिके स्तुति करे हैं। एतादृश गुणसीधु के सागर हे यमुना तुम रासरस समुद्र के विषे जाय कै सोभा पाओ हो। सो रासरस समुद्र कैसो है? जो भक्तजन गोपांगनान के ताप हरन करे हैं। इहाँ शंका होय जो रास में तो सब गोपांगनान के यूथ सोभा पावे हैं। एक श्री यमुनाजीकी सोभा कैसे कहे हैं? ताको समाधान जो रास में जूथन ते श्री यमुना जी को जूथ विलक्षण सोभा दे हैं। सो कीर्तन में कहे हैं :—

'श्याम सङ्ग स्याम व्हे रही श्री यमुने।' इति

जैसे प्राकृत समुद्र में यमुना जल की धारा जू नदी बहे है सो तैसे ही रास रस समुद्र में भी श्री यमुनाजी को जूथ भिन्न

मालूम दे हैं। और आगे पद में श्री गुसाँईजी वर्णन करे हैं :—

"रति भर श्रम जलोदित कमल परिमल-
ब्रजयुवति जन विहृति मोदे।
ताटंक चलन सुनिरस्त सङ्गीत युत-
मद मुदित मधुप कृत विनोदे" ॥७॥

रमण के भर करिकै भयो जो श्रमजल नाम पसीना तामें प्रगटी है कमल की गन्ध एतादृश ब्रजयुवतीजन जल विहार करे हैं। ता करिकै मोद नाम हर्ष श्री यमुनाजी कों भयो है। एतादृश हे यमुना ! फेरि जल विहार में ब्रजयुवतिन के तांटक नाम कान के भूषण करणफूल आदि तिनकी चंचलता ने निरास किये हैं संगीत नाम सर्व वाद्य और नृत्य एतादृश ताटंकन के संग मिलि कै मत्त प्रसन्न भ्रमर गुंजार करे हैं। अर्थात श्री प्रभून के संग गोपांगना रमण करिके श्रमित होय कै जल विहार करे हैं। ता समय कान के भूषण करण फूलझूमका आदि हिले-चले हैं। तिनके मोतीन के और घूंघरुन के सब्द मानो बाद्य बजे हैं और अंग को सुगन्ध के लोभी भ्रमर समीप आयके गुंजार करे हैं। सो मानो नृत्य और गान करें हैं। या प्रकार की सोभा के आधार श्री यमुना

जी है। इहाँ शंका होय जो वाद्य के भूषण तो और भी हैं। एक तांटक वर्णन कैसे ? ताको समाधान जल विहार में श्री कण्ठ मस्तक जल के ऊपर रहे हैं। ताते श्री गुसाँई जी ने एक ताँटक वर्णन किये हैं। अब आगे पद में वर्णन करे हैं:-

श्री गुसाँईजी अपने लिए श्री यमुनाजी ते प्रार्थना करे हैं। पदः-

निज ब्रजजनावनायात्त गोवर्द्धने-
राधिका हृदयगत हृद्य करकमले।
रतिमति शायित रस बिट्ठलेस्याशु-
कुरु वेणुनिनदाव्हान सरले ॥८॥

निज अपने ब्रजजन जो ब्रज के गोप गोपी पशु पक्षी आदि सब की रक्षा के लिये धारण कियो है गोवर्द्धन जाने और स्वामिनी के हृदय विषे मनोहर कमल है जाको और वेणुनाद करि कै भक्तन के बुलायवे में चतुर एतादृश श्रीकृष्ण के विषे विट्ठल जो श्री गुसाँईजी तिनकी रति नाम प्रीति अथवा रमण हे यमुना तुम करावो। या प्रकार अष्टपदी समाप्ति करिकें फेरि श्री यमुनाजी की भावना करिकै दोय श्लोक में श्रीयमुना जी पें विज्ञप्ति करें हैं।

श्लोकौ-ब्रजपरिवृढ बल्लभे कदात्वत्
चरण सरोरुह मीक्षणास्पदं मे॥

तव तटगत वालुकाः कदाहं-
सकल निजांग गता मुदा करिष्ये ॥१॥

ब्रज परिबृढ़ नाम ब्रज के स्वामी श्री कृष्ण की वल्लभा नाम प्रिया हे यमुना ! तुम्हारे चरण कमल हमारे नेत्रन के घर कब होंगे? अर्थात् चरण कमल कब देखेंगे । और तट की वालुका कों हम अपने सकल अङ्ग के विषे हर्ष करिकै कब धारण करेंगे । यह प्रार्थना श्री गुसाँईजी विप्रयोग काल में करे हैं । अब आगे और श्लोकः—

बृन्दावने चारु बृहद्वने-
मन्मनोरथं पूरय सूरसूते ।
दृग्गोचरः कृष्ण बिहार एव-
स्थिति स्त्वदीये तट एव भूयात् ॥२॥

हे सूरसुते नाम हे यमुना ! तुम हमारे मनोरथ पूरण करो । श्री वृन्दावन और सुन्दर बृहदवन के विषे श्रीकृष्ण को बिहार हमारे नेत्रन कौ विषय होय अर्थात् हम देखें और हमारी स्थिति तुम्हारे तट विषे होय[1] ।

* इति श्री यमुनाष्टपदी सटीक *

---

[1] —इससे यह प्रतीत होता है कि इस ग्रन्थ की रचना वि०सं० १६२८ के पूर्व हुई है कदाचित पूव श्लोक से यह भी अनुमान होता है कि अडेल स्थिति के समय श्रीगुसांईजी ने इस ग्रंथ की रचना की है। (गोलोकवासी श्रीद्वारकादास जी परिख के सौजन्य से)।

❀ ‘सौंदर्यपद्य’ की टीका ❀

श्री गुसाईं जी अपने स्वकीय जनन के बोधार्थ एकश्लोक करि श्री महाप्रभुजी के स्वरूप को ध्यानवर्णन करें हैं। इहां संका कदाचित होय ? जो ‘बल्लभाष्टक’ आदि ग्रंथन में तो स्वरूप वर्णन हैं। ताको समाधान, ‘बल्लभाष्टक’ ग्रंथ में आधुनिक मंदबुद्धि जीवन का बोध कदाचित न होय ताके लिए श्री गुसाँईं जी अत्यन्त करुणा करिकै सुगम बोधार्थ एक श्लोक में वर्णन करें हैं:—

सौंदर्यं निज हृद्गतं प्रकटितं स्त्रीगूढ भावात्मकं ।
पुम्रूपं च पुनस्तदन्तरगतं प्रावीविशत्स्वप्रिये ॥
संश्लिष्टावुभयोर्बभौ रसमयः कृष्णो हितत्साक्षिकं ।
रूपं तत्त्रितयात्मकं परमभिध्येयं सदा बल्लभम् ॥

टीका—श्रीकृष्ण के हृदय में श्री स्वामिनीजो विराजे हैं, और श्रीस्वामिनीजी के हृदय में श्रीकृष्ण विराजत हैं। सो स्त्री भाव में पुरुष भाव, और पुरुषभाव में स्त्रीभाव परस्पर विरोधी हैं। तातें संयोगकाल में रस की पुष्टि होय नहीं। ताके लिए दोऊ भाव की सुन्दरता संयुक्त भावात्मक सात्मक श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय श्री महाप्रभुजी के स्वरूप में प्रवेस कियो, सो युगल स्वरूप संयुवत श्रीकृष्ण जी हैं सो श्री महाप्रभुजी के स्वरूप तें सभा पाते हैं। तातें लीला सहित भय स्वरूप के

साक्षीभूत नाम तीनों भाव विशिष्ट रसात्मक श्रीमहाप्रभुजी को स्वरूप सदा सर्वकाल में ध्यान के योग्य है।

अब तृतियात्मक तत्साक्षी पद को स्पष्ट भाव श्रीकृष्ण और श्रीस्वामिनीजी के मध्यस्थ अथवा प्रदर्शक श्रीमहाप्रभुजी हैं। मध्यस्थ होय के मान छुडावे हैं अथवा दोऊ स्वरूप के हृदय में विराजे हैं। प्रदर्शक भाव श्रीस्वामिनीजी जहाँ निकुंजादिक में रहे हैं तहाँ श्रीठाकुरजी को दिखाय दे हैं। अथवा स्वकीयजन के ऊपर तब श्रीमहाप्रभु जी कृपा करें है तब लीला को अनुभव होय है।

अब तृतियात्मक पद को भाव—

श्रीप्रभु और श्रीस्वामिनी संयुक्त श्रीमहाप्रभुजी को स्वरूप हैं। सो वल्लभाष्टक ग्रंथ में श्री गुसाँई जी कहे हैं—

'वस्तुतः कृष्ण एव' सो तो कृष्ण हैं।

और सप्तश्लोकी में—

'प्रियागोपीभर्तु' पद करिकै श्रीस्वामिनी स्वरूप हैं। और राधावल्लभ ··· ' पद करिकै साक्षी स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी हैं—

और श्रीमहाप्रभुजी भी अपने स्वरूप कों तृतियात्मक तावे हैं—

"नमामि हृदय शेषे···" यह कारिका तें तृतियात्मक स्वरूप को बोध होय है। और श्रीहरिरायजी भी लिखे हैं—

"स्वामिनी भाव संयुक्त भगवद्भावभावितं।"

अब 'परं' पद को भाव—

परं नाम वियोग सो विप्रयोगात्मक--स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी को है। इहाँ संका होय जो--ऊपर तो संयोगात्मक स्वरूप कह्यो है। ताको समाधान--जो श्रीमहाप्रभु जी विरुद्ध धर्माश्रय हैं।

अब वल्लभ पद को भाव—

वल्लभ नामप्रिय। श्रीठाकुरजी और श्री स्वामिनी जी के प्रिय हैं। काहे तें जो परस्पर संयोग करावें है, और स्वकीय जन के प्रिय हैं। श्रीवल्लभ को स्वरूप ऐसो है। जो अदेय वस्तु कों देय है।

* इति सौंदर्य पद की भाषा टीका समाप्त *

समस्त पुष्टिमार्गीय एवं ब्रजभाषा साहित्य का
एकमात्र प्राप्ति संस्थान
पुष्टिमार्गीय पुस्तकों का केन्द्र
श्री बजरंग पुस्तकालय,
दाऊजी घाट, मथुरा